१६. दक्षिण अभियान

अभियान की योजना : राज्याभिषेक का समारोह संपन्न हुआ परंतु यह खुशी अधिक दिनों तक नहीं रह सकी । राज्याभिषेक के कुछ दिनों के बाद ही १७ जून १६७४ को माँसाहेब का देहावसान हो गया । शिवाजी महाराज का सशक्त आधार चला गया । स्वराज्य में समस्त प्रजा का आधार शिवाजी महाराज थे परंतु शिवाजी महाराज का आधार माँसाहेब थीं । वे उनके जीवन की सच्चे अर्थों में मार्गदर्शक और गुरु थीं । माँसाहेब की मृत्यु से उन्हें अत्यंत दुख हुआ परंतु अधिक दिनों तक शोक मनाना उनके लिए संभव नहीं था । उन्हें स्वराज्य को व्यवस्थित रूप से चलाना था ।

शिवाजी महाराज ने कर्नाटक प्रदेश पर आक्रमण करने का निश्चय किया । उन्हें आदिलशाह से अब कोई डर नहीं था क्योंकि आदिलशाही पतन पर थी लेकिन उत्तर का मुगल सम्राट औरंगजेब मराठों के राज्य को नष्ट करने के लिए घात लगाए बैठा था । वह स्वराज्य को कब मिटाएगा, इसका कोई भरोसा नहीं था । शिवाजी महाराज ने सोचा कि मुगलों के संकट का सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि दक्षिण में भी कोई सुदृढ़ स्थान उनके हाथ में हो । इसलिए उन्होंने दक्षिण के प्रदेशों पर कब्जा करने का विचार किया । इस अभियान के लिए शिवाजी महाराज ने गोलकुंडा के कुतुबशाह से सहायता माँगी । उसने बड़ी खुशी से शिवाजी महाराज को सहयोग देना स्वीकार किया ।

दक्षिण अभियान के पीछे शिवाजी महाराज का एक और उद्‌देश्य था । उनका सौतेला भाई व्यंकोजीराजे दक्षिण में तंजौर की जागीर सँभाले हुए थे । व्यंकोजीराजे के पास पिता जी की कर्नाटक की जागीर होते हुए भी व्यंकोजीराजे ने उसका कोई भी हिस्सा शिवाजी महाराज को नहीं दिया था । यही नहीं बल्कि स्वराज्य के प्रति उनके मन में आदरभाव भी नहीं था । वह शिवाजी महाराज के प्रति उपेक्षा का भाव रखते थे । उनसे मिलकर शिवाजी महाराज को यह मालूम करना था कि स्वराज्य के काम में वे क्या सहायता कर सकते हैं ।

गोलकुंडा में आगमन : शिवाजी महाराज कर्नाटक जाने के लिए निकले । गोलकुंडा के अबुल हसन कुतुबशाह ने उन्हें मिलने के लिए निमंत्रण दिया था । इसलिए शिवाजी महाराज ने पहले कुतुबशाह की राजधानी में उससे मिलने और फिर दक्षिण विजय के लिए आगे बढ़ने की योजना बनाई ।

गोलकुंडा कुतुबशाह की राजधानी थी । कुतुबशाह ने शिवाजी महाराज के स्वागत की बहुत बड़ी तैयारी की । भेंट के लिए विशेष शामियाना तैयार किया गया था । शिवाजी महाराज राजधानी में दाखिल हुए । लोग उनके दर्शन करने रास्ते के दोनों ओर खड़े थे । उनके पराक्रम की खबरें देश में चारों ओर फैल गई थीं । अफजल खान का वध, शाइस्ता खान की दुर्दशा और आगरे से निकल जाना आदि रोमांचकारी प्रसंग के समाचार देशभर में फैल चुके थे । इस कारण महाराज का वहाँ

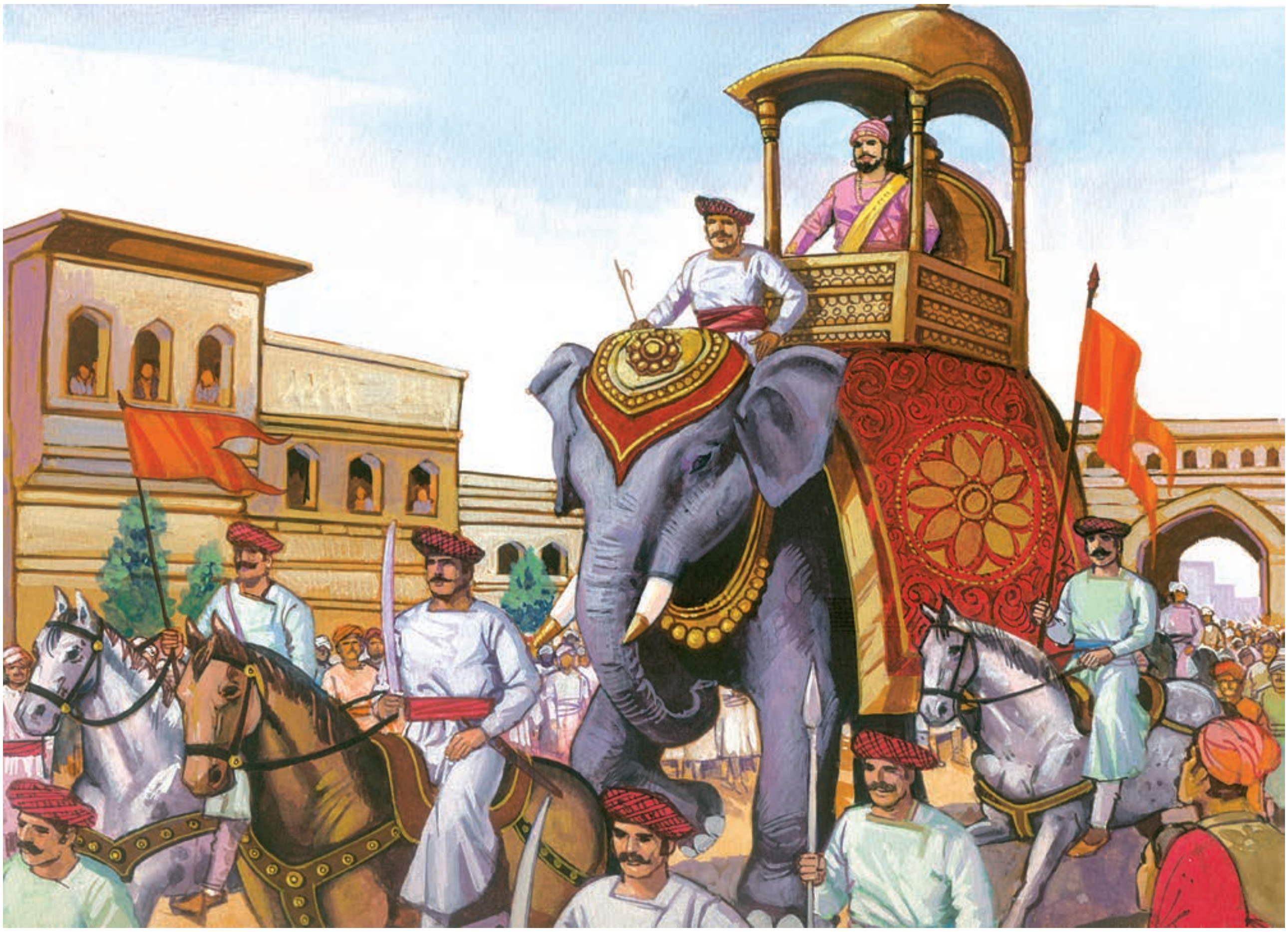

शिवाजी महाराज की गोलकुंडा की ऐतिहासिक भेंट

भव्य स्वागत हुआ । घर-घर से लोग शिवाजी महाराज पर फूलों की वर्षा कर रहे थे । जनता का स्वागत स्वीकार करने के पश्चात शिवाजी महाराज कुतुबशाह के दरबार में आए । कुतुबशाह उनके स्वागत के लिए आगे बढ़े और विशेष रूप से सजाए गए अपने समकक्ष सिंहासन पर उसने महाराज को बिठाया । महाराज के स्वागत में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी । स्वागत-सत्कार होने के पश्चात शिवाजी महाराज कर्नाटक अभियान के लिए चल पड़े ।

जिंजी विजय : शिवाजी महाराज पूर्वी तट पर आ गए । चेन्नई के दक्षिण में जिंजी का किला है । यह रायगढ़ की तरह विशाल और सुदृढ़ है । उसपर घेरा डालकर महाराज ने उसे जीत लिया । दक्षिण में स्वराज्य का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र तैयार हो गया । फिर शिवाजी महाराज ने वेल्लोर के किले पर घेरा डाला । कई महीनों तक घेरा डालने पर भी किला कब्जे में नहीं आ रहा था । तब वेल्लोर की पहाड़ी से शिवाजी महाराज ने किले पर तोपों की वर्षा की और किला जीत लिया । उन्होंने कर्नाटक में बीस लाख की आयवाला प्रदेश और छोटे-बड़े ऐसे अनगिनत किले जीत लिए ।

व्यंकोजीराजे से भेंट : महाराज ने अपने सौतेले भाई व्यंकोजीराजे को मिलने के लिए बुलाया । वे अनिच्छा से आए । महाराज ने उनका उचित सम्मान किया । उन्होंने व्यंकोजीराजे को समझाने का प्रयत्न किया और उनसे स्वराज्य के

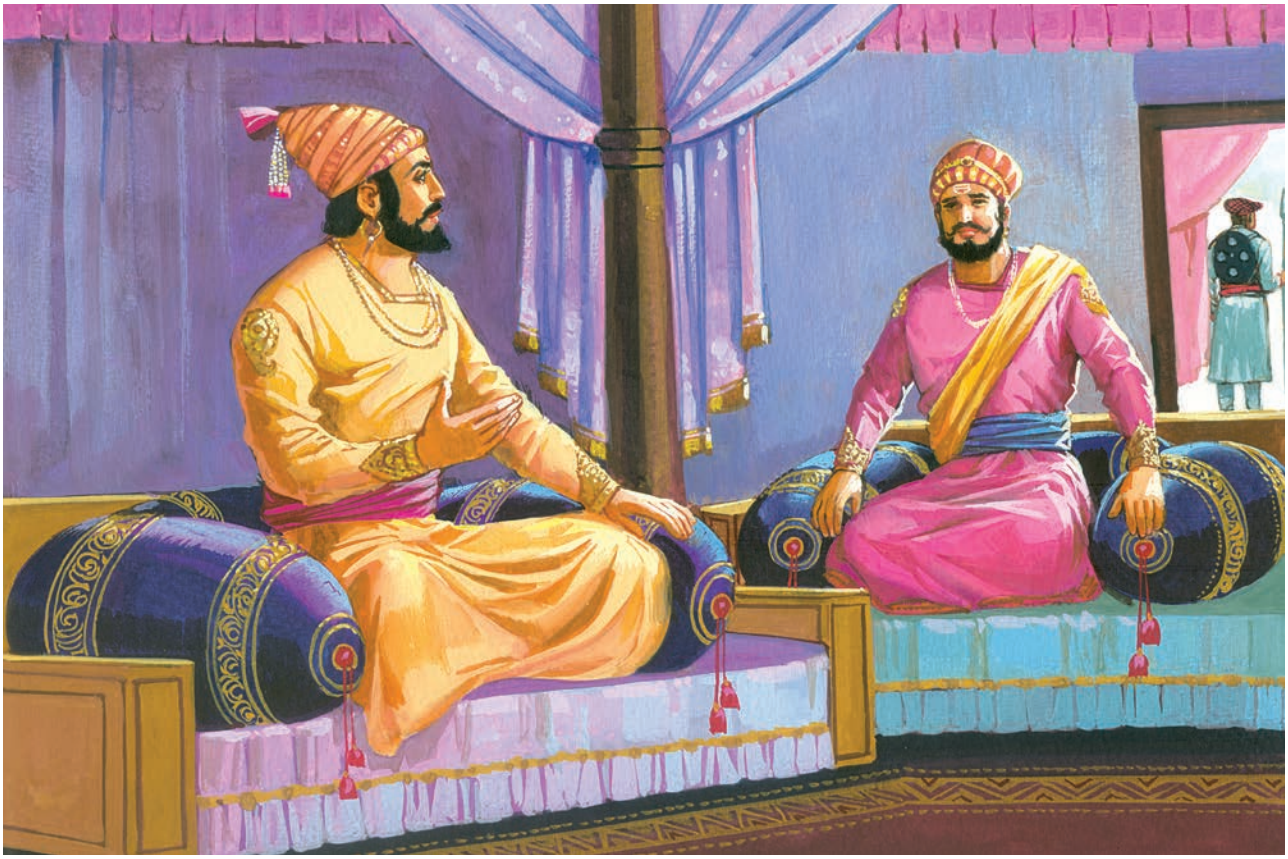

शिवाजी महाराज–व्यंकोजीराजे की भेंट

कार्य में सहयोग देने के लिए आग्रह किया । कुछ दिनों तक व्यंकोजीराजे शिवाजी महाराज के साथ रहे लेकिन एक रात महाराज से बिना कुछ कहे वह तंजौर चले गए और फिर उन्होंने शिवाजी महाराज की सेना पर आक्रमण कर दिया । शिवाजी महाराज की सेना ने उन्हें धूल चटाई । व्यंकोजीराजे हार गए । अपने भाई के व्यवहार से शिवाजी महाराज को बहुत दुख हुआ । उन्होंने व्यंकोजीराजे को समझाने के लिए कई पत्र लिखे । जिंजी के दक्षिण का कुछ प्रदेश उन्हें दिया । उनकी पत्नी दीपाबाई को भी शिवाजी महाराज ने उपहारस्वरूप कर्नाटक का कुछ प्रदेश दिया । महाराज ने व्यंकोजीराजे को पत्र में लिखा, ‘शत्रुओं पर भरोसा न करें । स्वयं पराक्रम दिखाएँ ।’

कर्नाटक पर विजय प्राप्त कर महाराज रायगढ़ लौटे । इस अभियान की थकान का वे अनुभव कर ही रहे थे कि उन्हें जंजीरा के सिद्दी के विरुद्ध नौसेना अभियान चलाना पड़ा । इस समय महाराज की आयु पचास वर्ष की थी । तीस–पैंतीस वर्ष तक उन्होंने लगातार परिश्रम किए थे । उन्हें कभी भी विश्राम नहीं मिला था ।

प्रजा का रक्षक चला गया : ३ अप्रैल १६८० के दिन सभी को दुख के सागर में छोड़कर शिवाजी महाराज ने सदा के लिए इस संसार से विदा ली । प्रजा का रक्षक चला गया । अपने जीवन में शिवाजी महाराज ने अनगिनत महान कार्य किए । उन्होंने शक्तिशाली शत्रुओं को पराजित करके ‘हिंदवी स्वराज्य’ स्थापित किया । संपूर्ण भारत में महाराज के कार्य का कोई सानी नहीं था । शिवाजी महाराज महान राष्ट्रपुरुष थे ।

शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित स्वराज्य

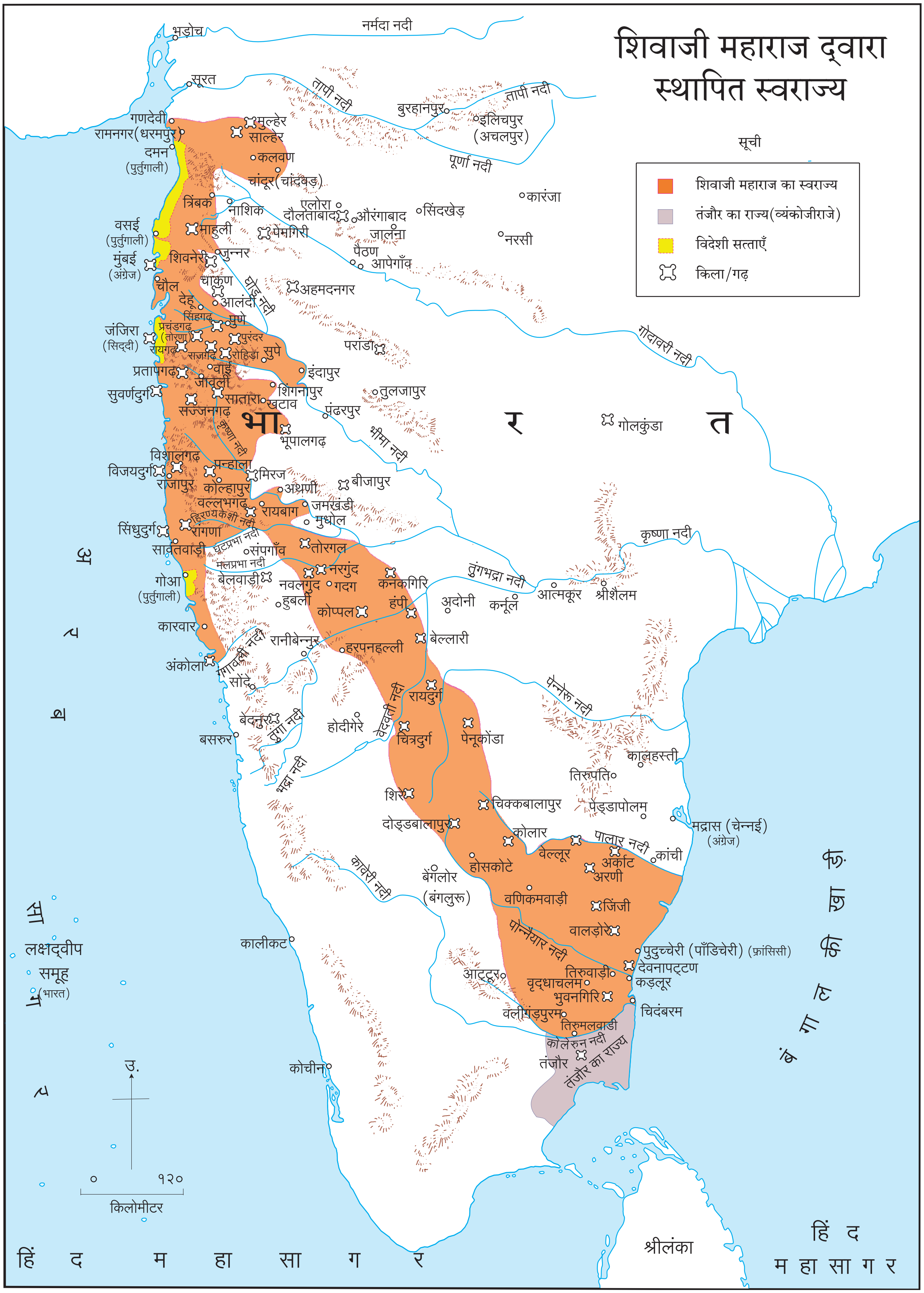
सूची
🟧 शिवाजी महाराज का स्वराज्य
▨ तंजौर का राज्य(व्यंकोजीराजे)
🟨 विदेशी सत्ताएँ
⌘ किला/गढ़
भड़ोच
नर्मदा नदी
सूरत
तापी नदी
बुरहानपुर
इलिचपुर (अचलपुर)
पूर्णा नदी
गणदेवी
रामनगर(धरमपुर)
मुल्हेर
साल्हेर
दमन (पुर्तुगाली)
कलवण
चांदूर(चांदवड)
त्रिंबक
नाशिक
एलोरा
दौलताबाद
औरंगाबाद
सिंदखेड
कारंजा
वसई (पुर्तुगाली)
माहुली
पेमगिरी
जालना
नरसी
पैठण
आपेगाँव
मुंबई (अंग्रेज)
शिवनेरी
जुन्नर
चाकुण
भीमा नदी
अहमदनगर
चौल
देहू
आलंदी
सिंहगढ़
पुणे
जंजिरा (सिद्दी)
प्रचंडगढ़ (तोरणा)
पुरंदर
रायगढ़
राजगढ़
रोहिड़ा
सुपे
प्रतापगढ़
वाई
परांडा
गोदावरी नदी
इंदापुर
जावली
शिंगनापुर
तुलजापुर
सुवर्णदुर्ग
सातारा
खटाव
पंढरपुर
सज्जनगढ़
भा
र
त
गोलकुंडा
कृष्णा नदी
भूपालगढ़
भीमा नदी
विशालगढ़
विजयदुर्ग
पन्हाला
मिरज
राजापुर
कोल्हापुर
अथणी
बीजापुर
वल्लभगढ़
हिरण्यकेशी नदी
रायबाग
जमखंडी
मुधोल
सिंधुदुर्ग
रांगणा
घटप्रभा नदी
सावंतवाड़ी
संपगाँव
तोरगल
मलप्रभा नदी
कृष्णा नदी
गोआ (पुर्तुगाली)
बेलवाड़ी
नरगुंद
नवलगुंद
गदग
कनकगिरि
तुंगभद्रा नदी
हुबली
कोप्पल
हंपी
अदोनी
कर्नूल
आत्मकूर
श्रीशैलम
कारवार
रानीबेन्नुर
हरपनहल्ली
बेल्लारी
अंकोला
गंगावती नदी
सोंदे
पेन्नेरु नदी
रायदुर्ग
बेदनूर
तुंगा नदी
होदीगेरे
वेदवती नदी
बसरुर
चित्रदुर्ग
पेनूकोंडा
कालहस्ती
भद्रा नदी
तिरुपति
शिरे
चिक्कबालापुर
पेड्डापोलम्
दोड्डबालापुर
मद्रास (चेन्नई) (अंग्रेज)
कोलार
पालार नदी
कांची
कावेरी नदी
बेंगलोर (बंगलुरु)
होसकोटे
वेल्लूर
अर्काट
अरणी
वणिकमवाड़ी
जिंजी
वालड़ोरे
कालीकट
पोन्नैयार नदी
पुदुच्चेरी (पाँडिचेरी) (फ्रांसिसी)
आट्टूर
तिरुवाड़ी
देवनापट्टण
वृद्धाचलम
कड़लूर
भुवनगिरि
वलीगंडपुरम
चिदंबरम
तिरुमलवाड़ी
कालेरुन नदी
तंजौर
तंजौर का राज्य
कोचीन
अ र ब सा ग र
लक्षद्वीप समूह (भारत)
बं गा ल की खा ड़ी
उ.
० १२०
किलोमीटर
श्रीलंका
हिं द म हा सा ग र
हिं द म हा सा ग र

The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2014. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) व्यंकोजीराजे दक्षिण में ······· की जागीर संभाले हुए थे ।
(वेल्लोर, तंजौर, बेंगलोर)

(आ) ······· कुतुबशाह की राजधानी थी ।
(दिल्ली, जिंजी, गोलकुंडा)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज का व्यंकोजीराजे से मिलने का उद्‌देश्य क्या था ?

(आ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे से क्या आग्रह किया ?

(इ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे को पत्र में क्या लिखा ?

३. कारण लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज ने दक्षिण के प्रदेश जीतने का विचार किया ।

(आ) शिवाजी महाराज ने व्यंकोजीराजे को समझाने के लिए पत्र भेजे ।

उपक्रम

शिवाजी महाराज और व्यंकोजीराजे की भेंट और उनके बीच हुए संवाद का नाट्यीकरण करो ।

6K7H8S

शिवाजी महाराज की समाधि – रायगढ़